

गायो गायो री सजनी मंगलाचार ।
आयो स्वामिनि जन्म जो सुन्दर त्यौहार ॥
ओ सुनयना जनक मिली हर खे हलाइनि
रिषी मुनी था वेद मंत्र गाइनि
गुरू शतानंद कयो आ यज्ञ विस्तार ॥
ओ सुंदर सिंघासन पै प्रघटी कुमारी
सहसैं सखियुनि जंहिजी आरती उतारी
नभ धरणी में छांयो जै जै कार ॥
ओ शोभा दिसी ठरिया बाप महतारी
रोम रोम में थियो हर्ष अपारी
महिरुनि जो वसियो आ मेंघ मल्हार ॥
ओ उमंग सां अलबेली गोद में विहारी
रिषियुनि मुनियुनि तद्रहीं आशीश उचारी
जुग जुग जीओ श्री जनक कुमारि ॥
ओ देवनि नभ मां पुष्प वर्षाया
देव पतिनियुनि मिठा गुण गीत गाया

जिति किथि छायेँ हर्ष अपार ॥

ओ महल में अची मंगल मनाया

धन रतननि जा भण्डार लुटाया

मिथिला नगर भई अजबु बहार ॥

ओ गरीबि श्री खण्डि श्रीजू पालने झुलाइन

मिठी ललकार सां लोली गीत गाइनि

द्रिसी चंद्र मुखड़ो कनि नची किलकार ॥